

Rishi Vishwamitra Vidya Foundation

अथर्ववेद (१.३.१)

मन्त्र, सायण भाष्य और कौशिक सूत्र विश्लेषण

Presented by: Acharya Kapil

Contact: 8756390767

१. मन्त्र विनियोग (Mantra Viniyog)

कौशिक सूत्र (२५.१०-१९) के अनुसार, इस सूक्त (विद्वा शरस्य...) का विनियोग मूत्र और मल के निरोध (रुकावट) तथा उदावर्त रोग की चिकित्सा में किया जाता है। रोगमुक्ति के लिए निम्नलिखित उपाय सूत्रोक्त प्रकार से किए जाते हैं:

- मूत्र कराने के साधन के रूप में हरीतकी (हरड़) और कर्पूर (कपूर) को बाँधना (कैथेटर की तरह उपयोग)।
- चूहे की बाम्बी की मिट्टी, पूतीक घास, दही, मट्ठा, या पुराने सड़े हुए काठ की छीलनों का काढ़ा (फाण्ट) बनाकर रोगी को पिलाना।
- रोगी को हाथी, घोड़े आदि वाहनों की सवारी कराना या बाण चलवाना (शारीरिक व्यायाम)।
- शर (सरकण्डे की नली) से मूत्रमार्ग (urethra) को खोलना या लोहे की शलाका (उपकरण) का मूत्रद्वार में प्रवेश कराना।
- 'विषितं ते वस्तिबिलम्' (अथर्ववेद १.३.६) ऋचाओं को पढ़कर चूहे की मिट्टी आदि औषधियों से मूत्र-मल निरोध वाले पुरुष को बस्ति (एनिमा) देना।

२. मन्त्र एवं शब्दार्थ (Mantra & Word Meanings)

विद्या शरस्य पितरं पर्जन्यं शतवृष्ण्यम् ।
तेना ते तन्वे शं करं पृथिव्यां ते निषेचनं बहिष्टे अस्तु बालिति ॥१॥

पद पाठ शब्दार्थः

- **विद्या / विद्या** = हम (यथावत्) जानते हैं।
- **शरस्य** = हिंसक बाण (या सरकण्डे) के।
- **पितरम्** = पिता, पालक या उत्पन्न करने वाले को।
- **पर्जन्यम्** = वर्षा के देवता पर्जन्य को।
- **शतवृष्ण्यम्** = असीमित वीर्य/शक्ति वाले (स्थावर-जङ्गम को उत्पन्न करने में समर्थ)।
- **तेन / तेना** = उस (बाण या शर) के द्वारा।
- **ते** = तुम्हारे (मूत्ररोग से ग्रस्त व्यक्ति के)।
- **तन्वे** = शरीर के लिए (षष्ठी के अर्थ में चतुर्थी)।
- **शम्** = रोगों की शान्ति या उपशमन।
- **करम्** = मैं करता हूँ।
- **पृथिव्याम्** = भूमि पर।
- **ते** = तुम्हारा (मूत्र)।
- **निषेचनम्** = भली-भांति स्राव (निकलना)।
- **बहिः** = शरीर के बाहर।
- **अस्तु** = हो जाए।
- **बाल् इति** = 'बाल्' (छपाक) की ध्वनि करता हुआ (या जीवन देने के लिए)।

३. मन्त्र का सम्पूर्ण हिन्दी अनुवाद

हम इस हिंसक बाण (अथवा जल से उत्पन्न सरकण्डे) के पिता व उत्पादक—असीमित शक्ति वाले वर्षा के देवता पर्जन्य को भली-भांति जानते हैं। उस शर (सरकण्डे की नली) के द्वारा मैं तुम्हारे शरीर को रोगमुक्त करता हूँ। तुम्हारा मूत्र-स्राव पृथ्वी पर हो। तुम्हारे शरीर के भीतर रुका हुआ मूत्र 'बाल्' (छपाक) की ध्वनि करता हुआ वेग से बाहर गिरे।

४. सायण भाष्य का हिन्दी अनुवाद

सायणाचार्य मन्त्र की व्याख्या करते हुए कहते हैं:

हम हिंसक बाण (शर) के पिता, अर्थात् पालन करने वाले या उत्पन्न करने वाले को यथार्थ रूप से जानते हैं। वे कैसे हैं? 'शतवृष्ण्यम्' अर्थात् अपरिमित शक्ति वाले हैं। वे विचित्र प्रकार के वृक्ष, झाड़ियों आदि स्थावर (स्थिर) और पशु, मनुष्य आदि जङ्गम (चलने वाले) प्राणियों को उत्पन्न करने और पोसने में समर्थ हैं। ऐसे वृष्टि देने वाले पर्जन्य देव को हम 'पिता' के रूप में जानते हैं—यह पूर्व पद से सम्बन्ध है।

उक्त लक्षणों वाले उस 'शर' के द्वारा, हे मूत्रनिरोध आदि व्याधियों से ग्रस्त पुरुष! मैं तुम्हारे शरीर के रोगों का शमन (शान्ति) करता हूँ। यास्क ने भी कहा है कि 'शम्' का अर्थ रोगों का शमन और भयों को दूर करना है।

शान्ति किस प्रकार करता हूँ, यह आगे बताया गया है: तुम मूत्ररोग से पीड़ित हो, तुम्हारा रुका हुआ मूत्र भूमि पर भली-भांति स्रवित हो (गिरे)। तुम्हारे शरीर के भीतर रुका हुआ मूत्र 'बाल्'—यह एक अनुकरणात्मक (आवाज का बोधक) शब्द है—इस प्रकार की ध्वनि करता हुआ बाह्य प्रदेश में आ जाए (बाहर निकल जाए)। मन्त्र की शक्ति से यह विभिन्न प्रकार की ध्वनि करता हुआ शीघ्रता से शरीर से निकल जाए।

अथवा 'बाल्' का अर्थ 'बल प्राणने' धातु से है, जिसका अर्थ है—इस रोग से पीड़ित व्यक्ति के जीवन (प्राणों की रक्षा) के लिए यह मूत्र बाहर निकल जाए।

५. व्याकरणिक साधन एवं प्रमाण (Grammar Derivations)

सायण भाष्य में पाणिनि अष्टाध्यायी एवं उणादि सूत्रों के आधार पर निम्नलिखित पदों की सिद्धि दी गई है:

शतवृष्ण्यम्: 'वृष सेचने' धातु से 'वर्षतीति वृषा' बनता है। 'कनिन् युवृषितक्षि' (उणादि १.१५६) सूत्र से 'कनिन्' प्रत्यय हुआ। वृष्णि में होने वाला 'वृष्ण्यम्' कहलाता है, जिसके लिए 'भवे छन्दसि' (पा. ४.४.११०) से 'यत्' प्रत्यय हुआ है। 'अल्लोपोऽनः' (पा. ६.४.१३४) से उपधा का लोप हुआ है। यहाँ 'ये चाभावकर्मणोः' (पा. ६.४.१६८) सूत्र से जो प्रकृतिभाव प्राप्त था, वह वेद होने के कारण (व्यत्ययेन) प्रवृत्त नहीं हुआ। बहुव्रीहि समास होने से पूर्वपद प्रकृतिस्वर हुआ है।

तेना / विद्या: 'अन्येषामपि दृश्यते' (पा. ६.३.१३७) सूत्र से वैदिक संहिता में (छन्दस) अन्तिम स्वर को दीर्घ आदेश हुआ है।

तन्वे: तनु शब्द से 'ऊङ् उतः' (पा. ४.१.६६) सूत्र से 'ऊङ्' प्रत्यय हुआ है। 'उदात्तयणो हल्पूर्वात्' (पा. ६.१.१७४) से प्राप्त विभक्त्युदात्तत्व का 'नोङ्धात्वोः' (पा. ६.१.१७५) से प्रतिषेध हुआ। तत्पश्चात् 'उदात्तस्वरितयोर्यणः स्वरितोऽनुदात्तस्य' (पा. ८.२.४) से विभक्ति को स्वरित किया गया है। यहाँ चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग षष्ठी (तन्वाः / शरीरस्य) के अर्थ में हुआ है (आडभावश्छान्दसः)।

शम्: 'शमु उपशमने' धातु से भाव अर्थ में 'विच्' प्रत्यय लगाकर निष्पन्न हुआ है।

करम्: 'डुकृञ् करणे' धातु से 'छन्दसि लुङ्लङ्लिटः' (पा. ३.४.६) सूत्र से वर्तमान काल में 'लुङ्' लकार हुआ (अथवा 'आशंसायां भूतवच्च' (पा. ३.३.१३२) से प्रार्थना में लुङ् हुआ)। 'कृमृदृरुहिभ्यश्छन्दसि' (पा. ३.१.५९) से च्लि को 'अङ्' आदेश हुआ और 'बहुलं छन्दस्यमाङयोगेऽपि' (पा. ६.४.७५) से 'अट्' आगम का अभाव हो गया।

पृथिव्याम्: पृथिवी शब्द डीषन्त और अन्तोदात्त है। 'उदात्तयणो हल्पूर्वात्' (पा. ६.१.१७४) से विभक्ति को उदात्त स्वर प्राप्त हुआ है।

निषेचनम्: 'नि' उपसर्ग पूर्वक 'सिञ्च्' धातु से भाव में 'ल्युट्' प्रत्यय हुआ। 'उपसर्गात्सुनोति' (पा. ८.३.६५) आदि सूत्रों से 'स' को 'ष' (षत्व) हुआ। 'लिति' (पा. ६.१.१९३) सूत्र से प्रत्यय से पूर्व का स्वर उदात्त हुआ और कृदन्तरपदप्रकृतिस्वरत्व से वही शेष रहा।

बाल्: यह या तो अनुकरण शब्द (onomatopoeia) है, अथवा 'बल प्राणने' धातु से णिजन्त अवस्था में 'क्विप्' प्रत्यय होकर सिद्ध होता है जिसका अर्थ 'जीवन हेतु' है।